विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
नेट-ब्यूरो

Code No. : 31

विषयः भाषा एवं भाषा विज्ञान

पाठ्यक्रम

इकाई-1 : भाषा एवं भाषाविज्ञान

भाषा की प्रकृति: मौखिक तथा लिखित रूप में भाषा,लिखित पाठ के रूप में भाषा – वाङ्मीमांसीय और साहित्यिक धारणाएँ, अर्थात् मानदंड, विशुद्धता और उनका परिरक्षण; सांस्कृतिक धरोहर के रूप में भाषा - सांस्कृतिक ज्ञान एवं व्यवहार का कोडीकरण तथा प्रसार; सामाजिक पहचान के चिह्नक के रूप में भाषा; एक वस्तु के रूप में भाषा अर्थात्, स्वायत्तता की धारणा, संरचना तथा इसकी इकाइयां और संघटक; भाषा का अभिकल्प वैशिष्ट्य (डिजाईन फीचर्स); लेखन पद्धति – लेखन की इकाइयां – स्वन (वर्ण-स्वन) अथवा अक्षर (आक्षरिक) एवं रूपिम / शब्द (शब्द–चिह्नपरक), संकेत भाषा, भाषा संकाय का अस्तित्व;भाषायीसक्षमता, आदर्श वक्ता-श्रोता।

भाषा अध्ययन के उपागम : भाषा के अध्ययन के प्राचीन उपागमः भारतीय तथा यूनानी-रोमन, संकेतवैज्ञानिक उपागम –संकेत का निर्वचन; सामाजिक व्यवहार की एक पद्धति के रूप में भाषा – परिवार, समुदाय तथा देश में भाषा का प्रयोग; संप्रेषण माध्यम के रूप में भाषा –संप्रेषणात्मक कार्य–संवेदात्मक, क्रियावृत्तिक, संदर्भगत, काव्यात्मक, अधिभाषावैज्ञानिक तथा समाज–संबोधात्मक; एक संज्ञानात्मक पद्धति के रूप में भाषा; संस्कृति और विचार के साथ संबंध (भाषायी सापेक्षता); सस्यूर द्विभाजन पद्धतियां : संकेतक और संकेतित, लैंग तथा पैरोल, समकालिक तथा कालक्रमिक, विन्यासक्रमात्मक तथा रूपावलीगत।

भाषा विश्लेषण: विभिन्न स्तरतथाउनका अधिक्रम–स्वनिक / स्वनिमिक, शब्दरूपात्मक, वाक्यविन्यासी, तथा शब्दार्थी / संकेत प्रयोगपरक; इनके अन्तर्संबंध; भाषायी इकाइयाँ और विभिन्न स्तरों पर उनका वितरण; वैषम्य और पूरण की धारणाएँ-एमिक तथा-एटिक संवर्गीकरण; विभिन्न स्तरों पर नियम की धारणा; व्याकरणिक तथ्यों का वर्णन बनाम व्याख्या।

भाषाविज्ञान तथा अन्य विषय क्षेत्र: गवेषणा से सम्बंधित अन्य विषय क्षेत्रों – दर्शनशास्त्र, नृविज्ञान, समाजशास्त्र, तंत्रिकाविज्ञान, वाक्विज्ञान, भूगोल, मनोविज्ञान, शिक्षा, कंप्यूटरविज्ञान तथा साहित्य – में भाषा विज्ञान की प्रासंगिकता।

इकाई-2 : स्वनविज्ञान एवं स्वनिम विज्ञान

स्वनविज्ञान

वाक् स्वनों के एक अध्ययन के रूप में स्वनविज्ञान: उच्चारणात्मक, श्रवणात्मक, तथा ध्वनिक स्वनविज्ञान।

उच्चारणात्मक स्वनविज्ञान : वाक् उत्पादन की प्रक्रियाः वायुप्रवाह प्रक्रिया, मुखनासिक्य प्रक्रिया, स्वनन प्रक्रिया, और उच्चारणात्मक प्रक्रिया;वाक् स्वनों का वर्गीकरण: स्वर तथा व्यंजन, मान-स्वर (प्राथमिक और द्वितीयक);समिश्र उच्चारण: द्वितीयक उच्चारण, सह-उच्चारण; अक्षर; अधिखंडात्मक तत्त्व– दीर्घता, बलाघात, तान, अनुतान, संहिता; स्वनिक लिप्यंकन: अन्तर्राष्ट्रीय स्वनिक वर्णमाला (आई पी ए)।

ध्वनिक स्वनविज्ञान : ध्वनि-तरंगें– सरल तथा सम्मिश्र, आवर्ती तथा अनावर्ती; सन्नाद; आवृत्ति तथा मूलभूत आवृत्ति, आयाम, अवधि; अनुनाद , फिल्टर्स, स्पेक्ट्रम, स्पेक्टोग्राम; फारमेंट्स, संक्रमण, प्रस्फोट; वागारंभकाल; महाप्राणत्व; न्वायज स्पेक्ट्रा; वाक्-स्वनों के लिए अनुसंकेत: स्वर (एक-स्वरक तथा संध्यक्षर), अर्ध-स्वर, स्पर्श, घर्षी, नासिक्य, पार्श्विक, विसर्प, व्यंजनों के उच्चारण के स्थान।

स्वनिमविज्ञान

वर्णनात्मक स्वनिमविज्ञान : स्वनविज्ञान बनाम स्वनिमविज्ञान; स्वनिम की अवधारणा, स्वन तथा उपस्वन; स्वनिक विश्लेषण के सिद्धान्त– स्वनिक सादृश्यता, व्यतिरेकी वितरण, पूरक वितरण, स्वतन्त्र विचलन, अभिरचना अन्विति; उभयअनन्यता की धारणाएँ, निर्वैषम्य तथा आर्किरूपिम।

प्रजनक स्वनिमविज्ञान : रेखीय तथा अरेखीय उपागमः स्वनिमिक प्रतिनिधत्व के स्तर; स्वनिमिक नियम; विशिष्ट लक्षण (प्रमुख वर्ग, रीति, स्थान इत्यादि); अमूर्तता विवाद; नियम अनुक्रम तथा नियम (रूल) अनुक्रम के प्रकार, चिह्नितता; कोशीय स्वनिमविज्ञान के नियम (प्रिंसिपुल्स); इष्टतमता सिद्धान्त के नियम।

इकाई-3 : रूप विज्ञान

आधारभूत संकल्पनाएँ : रूपविज्ञान का विषय क्षेत्र और प्रकृति; रूपिम, रूप, उपरूप, शून्य उपरूप, उपरूपों पर प्रतिबंध की संकल्पनाएँ; शब्दिम और शब्द; रूपिमों के प्रकार – स्वतन्त्र और बद्ध; धातु, अंग, आधार रूप, परप्रत्यय, मध्य प्रत्यय, पूर्व प्रत्यय, संवृक्त रूपिम, सर्वदेशी, आदिष्ट; प्रत्यय बनाम युक्त; व्याकरणिक संवर्ग– काल, पक्ष, बृत्ति, पुरुष, लिंग, बचन, विभक्ति चिह्नक तथा विभक्ति संबंध; पूर्व और पश्च स्थान, रूपवैज्ञानिक विवरण के माडलः मद तथा विन्यास, मद या प्रक्रम, शब्द तथा रूपावली रूपवैज्ञानिक विश्लेषणः रूपिम की पहचान; रूपक्रियात्मक परिवर्तन; रूपस्वनिमिक प्रक्रियाएँ; अन्तः तथा बहिः संधि; विभक्ति तथा व्युत्पत्ति; धातु रूप तथा संज्ञा रूप।

शब्द–निर्माण प्रक्रियाएँ : व्युत्पत्ति (प्राथमिक बनाम द्वितीयक व्युत्पत्ति, नामिकीकरण, क्रियाकरण इत्यादि), समासीकरण (समासों के प्रकारः अन्तःकेंद्रिक, बहिःकेंद्रिक इत्यादि), पुनर्द्विगुणन, सादृश्यमूलक व्युत्पत्ति, परिवर्तन, छिन्नन, मिश्रण, परिवर्णी शब्द, लौकिक व्युत्पत्ति, सर्जनात्मकतातथा उत्पादकता , अवरोध, कोष्ठन विरोधाभास, प्रत्यय क्रम-स्थापन में बाध्यताएँ।

रूप-वाक्य विन्यास : नामिकीकरण तथा शब्दरचनागत प्राक्कल्पना; व्याकरणिक प्रकार्य परिवर्तनकारक नियम; प्रेरणार्थक, कर्मवाच्य।

इकाई-4 : वाक्य विज्ञान

पारंपरिक तथा संरचनात्मक वाक्यविज्ञान : शब्द भेदःभारतीय वर्गीकरण (नाम, आख्यात, उपसर्ग, निपात); आधारिक वाक्यविन्यासी इकाइयाँ और उनके प्रकार: शब्द, पदबंध, उपवाक्य, वाक्य, कारक संबंध; व्याकरणिक संबंध तथा विभक्ति संबंध, रचना प्रकार (बहिःकेंद्रिक, अन्तःकेंद्रिक इत्यादि), सन्निहित संघटक विश्लेषण।

प्रजनक वाक्यविज्ञान : पैरामीटर तथा सर्वभौम व्याकरण, 'नल सब्जेक्ट पैरामीटर' , अन्तर्जातता प्राक्कल्पना, 'प्रजनक' पद का अर्थ, रचनांतरणपरक प्रजनक व्याकरण, संरचना तथा संरचना-आश्रितता, संरचना विश्लेषण; पूरक तथा अनुबंधक, प्रिंसिपुल्स ऐंड पैरामीटर्स थियरी, एक्स-बार सिद्धान्त, बांइडिंगथीटा सिद्धान्त, अनुबंधन सिद्धान्त, प्रो-ड्राप, NP-मूवेंमट,wh-मूवमेंट, हेड मूवमेंट, अनुबंधन, संचलन पर बाध्यताएं, सब्जेसेंसी, नियन्त्रण तथा उचित नियन्त्रण, लघु उपवाक्य, टॉपिकीकरण, गैरकतृकारक तथा गैरकर्मकारक, VP –इंटरनल सब्जेक्ट हाइपोथेसिस, स्प्लिट VP तथा VP- शेल हाइपोथेसिस, क्रास-ओवर फेनोमेना, विभक्ति जाँच सिद्धांत, कापी थियरी ऑफ मूवमेंट, अभ्यावर्तकता सिद्धांत।

अल्पतमता कार्यक्रम की कुछ प्रमुख संकल्पनाएँ : स्पेल आउट, ग्रीड, प्रौक्रेस्टिने, अंतिम उपाय, ए जी आर– आधारित केस थियरी, मल्टीपुल स्पेक प्राक्कल्पना, सशक्त तथा दुर्बल लक्षण, विवेचनीय तथा अविवेचनीय लक्षण।

रचनांतरणपरक संघटक : मूवमेंट का अनुवर्तन सिद्धान्त, इसके गुणधर्म, जाँच-युक्तियाँ और अभिसरण के लक्षण।

इकाई-5 : अर्थविज्ञान एवं संकेत प्रयोग विज्ञान

अर्थविज्ञान : अर्थ के प्रकार; वर्णनात्मक, संवेगात्मक तथा सामाजिक; आशय और संदर्भ, लक्ष्यार्थ तथा अभिधेयार्थ, आशय संबंध (समनामता, अवनामिता, विलोमता, समानार्थकता, इत्यादि); प्रतियोग के प्रकार (वर्गिकीय, ध्रुवीय, इत्यादि); संदिग्धार्थकता, वाक्यार्थ तथा सत्यताके हेतु, व्याघात, अनुलग्नता, 'अभिधा' , 'लक्षणा' , 'व्यंजना' ; मेंबरशिप (घटकत्व), यूनियन (सम्मिलन), इंटरसेक्शन (प्रतिच्छेदन), कार्डिनलिटी की धारणाएँ; मानचित्रण तथा प्रकार्य; प्रतिज्ञप्ति, सत्यता मूल्य, वाक्य अनुयोजक, समुद्दिष्ट संज्ञापद, विधेय, परिमाणक, परिवर्त, घटकीय विश्लेषण; निश्चयवाचकता, वृत्ति तथा वृत्तित्व, विशिष्ट बनाम जातीय; निश्चयवाचक तथा अनिश्चयवाचक; सामासिकता और इसकी सीमाएँ।

संकेतप्रयोग विज्ञान : प्रसंगान्तर्गत भाषा-प्रयोग, संप्रेषणः संप्रेषण का संवाद मॉडल और अनुमिति मॉडल, वाक्य का अर्थ और उक्ति का अर्थ, वाग्व्यापार; स्थिति-निर्देश; पूर्वमान्यता और निहितार्थः ग्रीसियंस, मैक्सिन्स; सूचना संरचना; निर्देशक संकेत, शिष्टता, शक्ति और ऐक्यभाव, प्रोक्ति विश्लेषण।

इकाई-6 : ऐतिहासिक भाषाविज्ञान

स्वन परिवर्तन : स्वन परिवर्तन के नववैयाकरणिक नियमः ग्रिम, वर्नर, ग्रासमैन द्वारा प्रवर्तित नियम; स्वन परिवर्तन का उद्भव और प्रसार; विखंडन तथा विलयन; सोपधिक और असोपाधिक स्वन-परिवर्तन; परिवर्तनों के प्रकार – स्वनिक बनाम स्वनिमिक परिवर्तन; समीकरण तथा विषमीकरण, संलयी, विपर्यास, विलोपन, अपिनिहिति; स्वन- परिवर्तन का शाब्दी अभिसरण, सादृश्य तथा स्वन-परिवर्तन के साथ इसका संबंध; भाषा के प्रोटो-स्टेजों का पुनर्रचनांतरण; ट्री तथा वेव मॉडल; विविध परिवर्तनों का सापेक्षिक कालानुक्रमण। भाषा-परिवर्तन के प्रति सामाजिक-भाषाशास्त्रीय उपागमः भाषा-परिवर्तन का सामाजिक अभिप्रेरण, चालू स्थिति में स्वन परिवर्तन का अध्ययन।

रूप—वाक्यात्मक तथा अर्थविषयक परिवर्तन : शब्दरूप क्रिया तथा वाक्यविन्यास में परिवर्तन में प्रतिफलित होने वाले स्वनिमिक परिवर्तन; समज्जन, व्याकरणिकताकरण तथा कोशीयकरण; व्याकरणिक संवर्गों और व्यतिरेकों की पुनर्प्राप्ति के सिद्धान्त;अर्थविषयक परिवर्तन और आर्थी परिवर्तन की प्रक्रिया – अर्थ विस्तार, अर्थ संकोचन, आलंकारिक भाषा।

<u>भाषायी पुनर्रचना :</u> बाह्य बनाम आंतरिक पुनर्रचना : तुलनात्मक विधि, सजात रूपों का संकलन, स्वनिमिक संवादिता स्थापन; वैषम्य तथा पूरकीकरण पर आधारित आद्य-भाषा के स्वनिमों की पुनर्रचना;पुनर्रचना के स्रोत के रूप में रूपस्वनिमिक प्रत्यावर्तन; तुलना, प्रत्यावर्तन तथा अप्रत्यावर्तन रूपावलियों के द्वारा ऐतिहासिक वैषम्य की पुनर्प्राप्ति; स्वन परिवर्तन के अपवादों का पता लगाना – सादृश्य, आदान, अनुरणन, सादृश्य तथा स्वन परिवर्तन की परस्परक्रिया; शब्द-सांख्यिकी।

<u>भाषा संपर्क एवं बोली भूगोल :</u> भाषायी आदान, कोशीय तथा संरचनात्मक; अभिप्रेरणा, आगत अनुवाद, आगत मिश्र-शब्द, कैलक्यू, समीकृत तथा असमीकृत आगत शब्द; तद्भव और तत्सम : आदान के विभिन्न प्रकार – सांस्कृतिक, अंतरंग तथा बोली; आगत शब्दों का वर्गीकरण; भाषा पर आगत शब्दों का प्रभाव; पिजिन्स तथा क्रियोल्स; आगत शब्दों के लिए स्रोत के रूप में द्विभाषिता; बोली-भूगोलः बोली एटलस; समभाषांश सीमारेखा; केन्द्रीय क्षेत्र, संक्रमण क्षेत्र तथा अवशिष्ट क्षेत्र।

इकाई-7 : समाजभाषाविज्ञान

<u>आधारभूत संकल्पनाएँ :</u> समाजभाषाविज्ञान तथा भाषा का समाजशास्त्र, समाज में भाषा के प्रति सूक्ष्म एवं दीर्घ उपागम, भाषायी रंगपटल : भाषा, बोली, समाज-बोली, व्यक्ति-भाषा; द्विभाषारूपिता, वर्जना, अपभाषा; व्यापक तथा परिसीमित संहिताएँ: भाषा-भाषी समुदाय संप्रेषणात्मक सक्षमता, वक्तृता का नृविज्ञान; व्यापक संप्रेषण की भाषा; संपर्क भाषा, भाषा और सामाजिक असमानता; लैंगुवेज इन डाइस्पोरा; नवीन भाषायी विश्व-व्यवस्थाएँ।

<u>भाषायी विकल्पनशीलता :</u> भाषायी विकल्पन में पैटर्न, भाषायी परिवर्त तथा भाषायी आयामों के साथ उनका सहविकल्पन, सामाजिक वर्ग / सामाजिक नेटवर्क / वय / लिंग / नृजातीयता; भाषा-निष्ठा, सामाजिक पहचान तथा सामाजिक अभिवृत्तियाँ, रूढ़िबद्धता।

<u>भाषा संपर्क :</u> द्विभाषिता, बहुभाषिता; कोड मिश्रण और कोड परिवर्तन; भाषा संपर्क के परिणामः भाषा अनुरक्षण, आदान, अभिसरण, अधस्तल प्रभाव, पिजिनीकरण तथा क्रेओलीकरण, भाषा-क्षति।

<u>भाषा विकास :</u> भाषा नियोजन, कायिक तथा स्थिति नियोजन, मानकीकरण तथा आधुनिकीकरण; भाषा आन्दोलन –सरकार और समाज द्वारा मध्यक्षेप, लिपि विकास एवं संशोधन, भाषायी अल्पसंख्यक और उनकी समस्याएं।

भाषा पारिस्थितिकी और विलुप्तप्रायता - अति वैविध्यता; भाषायी-भू-परिदृश्य निर्माण, भाषायी प्राणशक्ति, भाषायी विलुप्तप्रायता, विलुप्तप्रायता के मापदंड, विलुप्तप्राय भाषओं का प्रलेखन, पुनःअनुप्राणन।

<u>समाजभाषायी प्रविधि :</u> नमूनाचयन और उपकरण; समाजभाषायी परिवर्तों और उनके विभिन्न रूपों की पहचान; डाटा का मात्रात्मक विश्लेषण, परिवर्त से संबंधित नियम; नृजाति प्रणाली विज्ञान; सहभागी प्रेक्षण।

इकाई-8 : क्षेत्रीय प्ररूपविज्ञान तथा दक्षिणी एशियाई भाषा परिवार

<u>भाषा प्ररूप, सार्वभौम और भाषायी संबद्धता :</u> भाषा प्ररूप विज्ञान और भाषा सार्वभौम; भाषा के प्रकार – योगात्मक, विश्लेषणात्मक, (अयोगात्मक), संश्लेषणात्मक संलयी (विभक्ति प्रधान), मध्यप्रत्यय योजन तथा बहु-संश्लेषणात्मक (समावेशक) भाषाएँ। औपचारिक तथा अर्थगर्भित सार्वभौम, पूर्ण तथा सांख्यिकीय सार्वभौम; निहितार्थक सार्वभौम तथा अनिहितार्थक सार्वभौम;भाषायी संबद्धता –भाषाओं का आनुवंशिक, प्ररूपवैज्ञानिक और क्षेत्रीय वर्गीकरण।

<u>अध्ययन के लिए उपागम :</u> आगमनात्मकबनाम निगमनात्मक उपागम; भाषा के सार्वभौम तथा प्राचलिक परिवर्तन;शब्द-क्रम प्ररूपविज्ञान; दक्षिण-एशियाई भाषाओं के संदर्भ में अन्त-क्रिया प्रधान तथा मध्य-क्रिया प्रधान भाषाओं के लिए ग्रीनवर्ग द्वारा प्रतिपादित अभिलक्षण।

<u>दक्षिण एशियाई भाषाओं के प्रमुख लक्षण :</u> इंडो-आर्यन, द्रविडियन, आस्ट्रो-एशियाटिक, तथा दक्षिण एशियाई तिब्बतो-बर्मा भाषा परिवारों के ध्वन्यात्मक, स्वनिमिक, रूपक्रियात्मक और वाक्यविन्यासात्मक लक्षण; सूचना के स्रोत के रूप में भारतीय भाषा सर्वेक्षण; संपर्कजनित प्रारूपिक परिवर्तन; अभिसरण तथा वाक्यविन्यासात्मक परिवर्तन।

<u>भारत एक भाषायी क्षेत्र के रूप में :</u> भाषायी क्षेत्र की धारणा; 'एक भाषायी क्षेत्र के रूप में भारत' की संकल्पना के विशिष्ट संदर्भ में भाषा संपर्क और अभिसरण; मूर्धन्यीकरण, स्वर-संगति, महाप्राणत्व, पुनरूक्ति, प्रतिध्वनि निर्माण, अनुरणन, अर्थप्रकाशक संयुक्त क्रियाएँ, अन्वादेश के लक्षण; एक समाज-भाषायी क्षेत्र के रूप मेंभारत, एक अर्थबोध क्षेत्र के रूप में भारत, लघु-भाषायी क्षेत्र की धारणा।

इकाई-9 : अन्तर-अनुशासनिक एवं अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान —I (मनोभाषाविज्ञान, भाषा अधिगम और भाषा शिक्षण)

मनोभाषाविज्ञान

आधारभूत संकल्पनाएँ : मनोभाषाविज्ञान में आधारी मुद्दे, मस्तिष्क भाषा सम्बन्ध, विभिन्न सैद्धांतिक आधार : अनुभववादी-व्यवहारवादी, जैविकजन्मवादी तथा संज्ञानात्मक अन्तक्रियावादी, भाषा के जैविक आधार; भाषा अर्जन और अवस्थाएं;क्रांतिक अवधि प्राक्कल्पना।

भाषा–प्रक्रमण : प्रत्यक्षण, बोधन तथा उत्पादन की प्रक्रियाएँ; भाषा उत्पादन के साक्ष्य; बोधन में निहित चरण; भाषा का मानसिक प्रतिरूपण तथा शब्दकोश; बोधन तथा उत्पादन के बीच सम्बन्ध।

नैदानिक मनोभाषाविज्ञान : सामान्य तथा नैदानिक भाषा;वाचाघात; अपठन; हकलाहट; श्रवण-बाधित व्यक्ति और भाषा; मानसिक रूप से मंद व्यक्ति और भाषा।

भाषा अधिगम और भाषा शिक्षण

भाषा शिक्षण और भाषा अधिगम : प्रथम तथा द्वितीय भाषा अधिगम; भाषा अधिगम के व्यवहारपरक और संज्ञानात्मक सिद्धान्त; द्वितीय भाषा अधिग्रहण के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक पक्ष; भाषा शिक्षण की विधियाँ: भाषा शिक्षण में प्रयुक्त सामग्रियाँ और शिक्षण सहायक-साधन; कंप्यूटरसहायित भाषा शिक्षण (सी ए एल टी); भाषा परीक्षण; परीक्षणों के प्रकार; परीक्षणों की वैधता, विश्वसनीयता और मानकीकरण; अंतरभाषा।

भाषा शिक्षण विश्लेषण : भाषा शिक्षण के लक्ष्य; भाषा शिक्षण पाठ्यक्रम तैयार करने में निहित कारक तत्त्व : भाषायी सिद्धान्त, सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक कारक, आवश्यकता विश्लेषण, कक्षा में प्रस्तुतिकरण, पाठ्य पुस्तक का मूल्यांकन; पाठ्यक्रम के प्रकार : संरचनात्मक, संप्रेषणपरक, अभिप्रायात्मक; शिक्षक की भूमिका और शिक्षक प्रशिक्षण; सेल्फ-एक्सेस पैकेजों की भूमिका; भाषा शिक्षण और अधिगम के समाज-भाषायी तथा मनोवैज्ञानिक पक्ष।

व्यतिरेकी विश्लेषण : त्रुटि विश्लेषण और अंतरभाषा; आधारी अंतर-वैयक्तिक संप्रेषणात्मक कौशल (बी आई सी एस) तथा संज्ञानात्मक उन्नत भाषा निपुणता (सी ए एल पी)।

इकाई-10 : अन्तर-अनुशासनिक एवं अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान —II (अनुवाद, कोश निर्माण, अभिकलनात्मक भाषाविज्ञान, शैली विज्ञान, भाषा तथा मीडिया)

अनुवाद

भावानुवाद, अनुवाद तथा अनुसर्जन; साहित्यिक पाठ तथा तकनीकी पाठ का अनुवाद; अनुवाद में भाषाविज्ञान का उपयोग, भाषायी बंधुता और अनुवादपरकता; अनअनुवादपरकता; अनुवाद की इकाइयाँ;अर्थ तथा शैली की तुल्यता;ट्रांसलेशन लॉस एण्ड गेन, सांस्कृतिक पदों की समस्याएं; वैज्ञानिक पद; मुहावरे, रूपक, और कहावतें;

फाल्स फ्रेंड्स तथा ट्रांसलेशन शिफ्ट्स; अनुवाद का मूल्यांकन; विश्वसनीयता तथा पठनीयता; अनुवाद के प्रकार– आशु निर्वचन, मशीन साहाय्यित अनुवाद, मीडिया अनुवाद (डबिंग, कापी आडिटिंग, विज्ञापन, नारे, जिंगल इत्यादि)।

शब्दकोश निर्माण

शब्दकोश निर्माण कार्य : भाषा विज्ञान तथा शब्दकोश निर्माण, शब्दकोश की प्रविष्टियाँ– सूचना का व्यवस्थापन; अर्थ विवरण – समानार्थकता, बहुअर्थकता, समनामता, विलोमता, अवनामिता; तकनीकी पदों बनाम सामान्य शब्दों का उपचार।

शब्दकोशों के प्रकार : साहित्यिक, वैज्ञानिक, तथा तकनीकी; व्यापक एवं संक्षिप्त, एक-भाषिक और द्वि-भाषिक; सामान्य तथा शिक्षार्थी। ऐतिहासिक तथा व्युत्पत्तिमूलक, मुहावरों तथा लोकोक्तियों के शब्दकोश, विश्वकोशीय शब्दकोश, इलैक्ट्रानिक शब्दकोश, अंत्यक्षर कोश, पर्याय शब्दकोश तथा विभिन्न प्रकारों के शब्दकोशों के विशिष्ट उद्देश्य तथा लक्षण; अभिकलनात्मक कोश निर्माण)।

अभिकलनात्मक भाषाविज्ञान

कृत्रिम बुद्धि और भाषा; प्राकृतिक भाषा प्रक्रमण (एन एल पी);अभिकलनात्मक भाषाविज्ञान तथा सम्बद्ध अनुशासनों के साथ इसका संबंध; मशीन भाषा; पार्सिंग एण्ड जेनरेशन; पार्सर; कम्पाइलर; इंटप्रेटर– सूचना प्रकमण, डाटा की संरचना करना तथा फेर-बदल करना; कार्पस निर्माण; एन एल पी के प्रयास तथा भारत में कार्पस निर्माण कार्य: अनुसारक पार्सिंग : भारतीय भाषाओं के लिए रूपक्रियात्मक अभिज्ञापक, विश्लेषणक तथा उत्पादक; अभिकल्प कूट, मशीन ट्रांसलेशन सिस्टम्स (एम टी एस) का निर्माण; हाइपर ग्रामर्स, वर्ड-नेट्स का निर्माण, द कोल्हापुर कार्पस ऑफ इंडियन इंगलिश, द टी डी आई एल कार्पस प्रोजेक्ट।

शैली विज्ञान

शैली — वैयक्तिक शैली, अवधिपरक शैली, वरण के रूप में शैली, विचलन के रूप में शैली, 'रीति' के रूप में शैली, 'अलंकार' के रूप में शैली, व्यंजना (वक्रोक्ति) के रूप में शैली; अग्रप्रस्तुति; समांतरता; व्याकरण के रूप में पाठ; संरचना तथा ताना-बाना, संहति तथा संगति; सहित्यिक पाठ के संकेतपरक पक्ष; प्रोक्ति का शैली विज्ञान; शैली वैज्ञानिक विश्लेषण के स्तर – स्वनिमिक शब्द-कोशीय, वाक्यविन्यासात्मक तथा शब्दार्थपरक; साहित्यिक रचनाओं में शैलीपरक युक्तियां।

भाषा तथा मीडिया

जनसंचार माध्यम : मुद्रित तथा इलैक्ट्रोनिक, जनसंख्या माध्यमों में प्रयुक्त भाषा के प्रकार : समाचार, सम्पादकीय, विज्ञापन कार्य, मुद्रित तथा इलैक्ट्रोनिक मीडिया के लिए लेखन तथा सम्पादन; भाषा पर जनसंचार माध्यमों का प्रभाव।